Airo International Research Journal
Volume XV, ISSN: 2320-3714
March, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

ऑनलाइन कहानियाँ : हिन्दी कथा संसार का नया पृष्ठ

डॉ चित्रा सिंह
एसोसियेट प्रोफेसर
डॉ भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

वर्तमान काल में जब पुस्तक के स्थान पर मोबाइल, कंप्यूटर और लैपटॉप आए, तब भविष्य में साहित्य की दशा को लेकर काफी चर्चाएं हो रही थीं। बंद हो रहीं प्रसिद्ध पत्र– पत्रिकाएं भी चिंता का विषय थी। ऐसे में ऑनलाइन कहानियों और उपन्यासों ने हिन्दी साहित्य को फिर आम लोगों से जोड़ने का काम किया है। ऑनलाइन कहानियाँ एक नया प्रयोग ही है। गाडी, बसों और मेट्रो में भाग रहे जीवन को मोबाइल या लैपटॉप पर चंद मिनटों में सारीदुनिया की जानकारी लेने में व्यस्त लोगों को उतने ही समय में कहानी का डोज प्रस्तुत करना। युवाओं का लाइब्रेरी में जाने के बजाए कहीं भी नेट पर सामग्री पढ़ने का लाभ। ये कहानियां आज के पल–पल बदलते मूड, संवेदना, रिश्ते, तनाव आदि को सहजता से व्यक्त कर जाती हैं। ऑनलाइन कथाकार निखिल के अनुसार जिंदगी जहाँ कहीं हो, उसे खोजिए, धप्पा मारिए और खिलखिला के हँसिए। इन कहानियों के जरिए भूली बिसरी गलियों में भटक आइए, खेलते–कूदते बच्चों को निहारिए, पुराने बंद संदूकों में सुकून के चार लम्हें खोजिए, कुछ पुरानी मुहब्बतों को याद करिए और मेरी मानें तो कुछ नई भी फरमाइए।

बीज शब्द : कहानी, ऑनलाइन।

कहानी साहित्य की सबसे पुरानी विधाओं में एक है. जब लोगों ने बोलना शुरू किया होगा शायद तब से ही कहानी की परंपरा शुरू हो गई होगी. इंसान की प्रवृत्ति में है कि वह अपने अनुभवों को बाँटना चाहता है. वह किसी घटना को सुनना और सुनाना चाहता है. कहानी की परंपरा वहीं से शुरू हुई होती है. प्रिंटमीडिया के आने के बाद कहानी लिखित रूप में आई. किन्तु दादा–दादी, नाना–नानी के कहानियों के रूप में, ये सदियों से चली आ रही है. कहानी समाज और इन्सान की प्रतिबिम्ब होती है. कहते हैं किसी देश के समाज को जानना हो तो उसके साहित्य को पढ़े. वहाँ के लोगों की सोच, जीवन मूल्य, सामाजिक मान्यताएं, सब कहानी और उपन्यास में उभर आते हैं. मानव और समाज के साथ ही कहानी कला भी विकसित होती रही है. समाज के उतार चढ़ाव, लोगों की सोच, सामाजिक मान्यताएं. बनते–बिगड़ते जीवन मूल्य सब कहानियों में परिलक्षित होता है. आज की बात करें तो कहानी नाना–नानी, दादा–दादी, पत्रिकाओं के पन्नों और उपन्यासों के पन्नों से गुजरते हुए लैपटॉप और मोबाइल स्क्रीन पर आ गई है. जीवन के गति के साथ कहानी ने भी कदम मिला लिया. आज महानगर में लोगों के पास समय की बहुत कमी है. इंटरनेट आने के बाद वे अपने मोबाइल और लैपटॉप के अधिक करीब हो गए हैं. पहले यात्रा के दौरान पुस्तक साथी होते थे अब उसकी जगह लैपटॉप या मोबाइल ने ले लिया है. जिस पर लोग पसंदीदा कार्यक्रम न्यूज, मैच, गाना, फिल्म देखते हैं या कुछ पसंद का पढ़ते हुए समय बिताना पसंद करने लगे हैं. इस भागम–भाग के जीवन से कहानी का एक नया रूप उभरकर सामने आया है. वैसे लघु कहानी की परंपरा पुरानी है. कुछ पत्रिकाओं में छोटी–छोटी कहानियां, पन्नों के किसी कोने में या नीचे जगह पाती रही हैं. किंतु आज इस विधा ने अपना एक अलग अस्तित्व बना लिया है. सोशल मीडिया और ब्लॉक्स के क्षेत्र में इनकी पकड़ बहुत गहरी है. यही कारण है कि ऑनलाइन कहानियों को कई प्रकाशक पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित करने लगे हैं. पहले लिखित साहित्य को यानी की पत्रिकाओं के साहित्य को सोशल मीडिया या

इंटरनेट पर लिखित रूप में तैयार कर पेश करने का प्रयास किया जा रहा था. आप वहीं सोशल मीडिया की कहानी प्रिंट रूप में लाई जा रही. इस शोध में इसी तरह की कहानी और उपन्यास को परखने और समझने की चेष्टा की गई है. कहानी के नए उभरते स्वरूप को तलाशने और आनेवाले समय में उनकी भूमिका को खोजने की कोशिश की गई है, वर्तमान काल में जब पुस्तक के स्थान पर मोबाइल, कंप्यूटर और लैपटॉप को आते देखा तब, भविष्य में साहित्य की दशा को लेकर काफी शंकित थी। युवाओं का लाइब्रेरी में जाने के बजाए नेट पर सामग्री पढ़ने की आदत अट–पटी लगी। लाइब्रेरी जाने और पुस्तकों को ढूंढने में काफी वक्त लगाना पड़ता है। पर यहाँ घर बैठे सारी दुनिया छोटे से स्क्रीन पर उपलब्ध हो जाती है। तो समय की बचत और देश विदेश की पुस्तकें एक जगह मिल जाने की सुविधा ने मुझे भी प्रभावित किया। बदलते समय के साथ कदम मिलाकर चलना समझदारी है। परिवर्त्तन ही सत्य है। उसे स्वीकारकर उसके अनुरूप चलकर ही समाज और संस्कृति का विकास संभव है। आज का युग नए माध्यमों का युग है। साहित्य को इन नए माध्यमों में ढालकर ही विकसित और सुरक्षित रखा जा सकता है। नाना–नानी और दादा–दादी के मुख से शुरू हुई मौखिक कहानियाँ लिखित रूप में आई। पत्र–पत्रिकाओं, और पुस्तक रूप में आने के बाद रेडियो में उनका पदार्पण हुआ। समय के साथ विज्ञान के विकसित तकनीक से निर्मित नए–नए जन माध्यमों को साहित्यकारों ने सहर्ष आत्मसात किया। इसी कड़ी में नया जन माध्यम इंटरनेट भी साहित्य का एक नया प्लेटफार्म है जहाँ कहानी, कविता, लेख आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं ने अपना स्थान बनाना शुरू कर दिया है ।

टी.वी. कम्प्यूटर के दौर में जब पुस्तकों के स्थान पर आईपैड और मोबाइल आ गया है वैसे में लम्बी, गंभीर कहानियों, कविताओं, आलोचनाओं के स्थान पर ऑनलाइन रचनाएँ अपने को स्थापित करने में लगी हैं। कथा रचना के परंपरागत स्वरूप और मूल्यों को बदलते विचार धाराओं ने हमेशा प्रभावित किया है। युग के साथ उनमें बदलाव आता ही रहा है। समकालीन कहानी, नई कहानी, अकहानी आदि के रूप में प्रयोग होते रहे है। ऑनलाइन कहानियाँ भी एक नया प्रयोग ही है। भाषा, संस्कृति, अनुभूति और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है कहानियाँ और युग के अनुरूप ही उसे स्वरूप देने का प्रयास है ऑनलाइन कहानियाँ। यह एक प्रयास है जीवन और समाज की जोड़ने का गाडी, बसों और मेट्रो में भाग रहे जीवन को मोबाइल या लैपटॉप पर चंद मिनटों में साड़ी दुनिया की जानकारी लेने में व्यस्त लोगो को उतने ही समय में कहानी का डोज प्रस्तुत करना। उन्हें भागे हुए पलों में भी कुछ क्षण के लिए संवेदनाओं से जोड़ देना. पल भर को दिल के तारों को झकझोड़ कर इसमें तरंगे भर, उन्हें इन्सान होने का एहसास देने का प्रयास करती है ये कहानियाँ 2015 में राजकमल प्रकाशन से निरूपम द्वारा सम्पादित (लघु प्रेम कथा) की श्रृंखला का लोकार्पण हुआ। जो फेसबुक और ब्लाक पर लिखी कहानियों का संग्रह है। टेलिविजन एंकर रवीश कुमार की इश्क में शहर होना इस श्रृंखला की पहली पुस्तक है। जिसकी 20 दिनों में लगभग 1300 प्रतियों की एडवांस बुकिंग हुई। 13 महीने में 15000 पुस्तकें बिकीं। इस श्रृंखला की गिरीन्द्रनाथ झा की 'इश्क में माटी सोना' और विनित कुमार की 'इश्क कोई न्यूज नहीं' की 60 दिनों में 2000 किताबें बिकीं ।

गिरीन्द्रनाथ झा का कहना है– 'फेसबुक ने मुझे पाठक और समीक्षक दोनों दिया। इसने एकप्लेटफार्म दिया जिसके कारण राजकमल जैसे प्रकाशन को मैं दिखा। आज के युग में फेसबुक या सोशलमीडिया एक ताकतवर हथियार है उसे हमें नई पीढ़ी के लिए समझदारी से इस्तेमाल करना चाहिए ।'

विनित कहते हैं–'ये कहानियाँ हमारे समाज को उनके कुंठाओं (complex) से मुक्त करवाती है। प्यार सिर्फ एक बार नहीं होता है। यह बार बार होता है। यह जब भी होता है खास होता है। हम एक रिश्ते से दूसरे रिश्ते में पड़ते हैं लेकिन समाज आज भी इसे स्वीकारने को तैयार नहीं।'

सत्याग्र हई पत्रिका के लेख 'लघु प्रेमकथाओं (लप्रेम) की प्रेम सरीखी क्षणभंगुरता उनकी मजबूती है या कमजोरी?' में कविता लिखती है "लप्रेम श्रृंखला के तहत अभी तक प्रकाशित हुई तीनों किताबों से गुजरते हुए एक बात साफ समझ आती है कि यह विधा इस दौर की मजबूरी से जन्मी है."

'हिन्द युग्म 'के संपादक शैलेश भारतवासी ने बताया की 'हिन्द–युग्म 2010 से ऑनलाइन कहानियों को लगातार छाप रहा है। अब तक लगभग 150पुस्तकें वे प्रकाशित कर चुके हैं। ये उन लेखकों की रचनाएँ हैं जो सिर्फ और सिर्फ ब्लॉग या सोशलमीडिया पर लिखते हैं। 2004 से अनूप शुक्ल 'फुरसतिया' ब्लाक लिख रहे हैं। एक पुलिया से वे रोज गुजरते थे। उसी पुलिया से जोड़ कर लगातार सौ लघुकथाओं का सृजन किया उन्होंने।' पुलिया पर जिंदगी' 2014 में प्रकाशित हुई। उनके व्यंग्य लेखों का संकलन 'बेबकूफी का सौंदर्य' 2016 में रुझान प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। इनकी पुस्तक 'शब्दों का सफर' भाषा विज्ञान से जुड़ा है, जिसे राजकमल प्रकाशन ने 2010 में छापा इसमें बोलचाल की हिंदी के प्रचलित 10 हजार शब्दों पर काम किया है–'शब्द ययावर की तरह होते है। एक भाषा से दूसरी भाषा में उनकी घुसपैठ सदियों से जारी है।' हिंदी कहानी का जन्म सदियों पूर्व से माना जाता है। प्राचीन ग्रंथों, आर्यों, जातकों, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि से चलकर प्रेमचंद्र, प्रेमचंद्रोत्तर जनवादी कहानी, साठोत्तरी–कहानी, समकालीन कहानी, अकहानी आदि अनेक आंदोलनों और पड़ावों से गुजरी है। कहानी के इन आंदोलनों का प्रमुख उद्देश्य यथार्थ के बहुआयामी चित्रण द्वारा कहानी को समाज के निकट लाना उसका दर्पण बनाना है। इसी कड़ी में इंटरनेट पर लिखी जा रही कहानियाँ भी एक आन्दोलन, एक प्रयोग है।

ये कहानियों आज को बखूबी अंकित करती है। आज की पीढ़ी की सोच, उनकी समझ, उनकी चाह, उनके तनाव प्राचीन युग से अलग है। इस मशीनी युग कि नए पौध और नई सोच को इस कहानियों के माध्यम से समझा जा सकता है। भूमंडलीकरण और सूचना माध्यम की उड़ान ने किस तरह पूरी सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों को प्रभावित किया है इन कहानियों में दिखता है। इस युग को समझने में और भविष्य में आने वाली मानसिक और सामाजित चुनौतियों की आहट भी इन कहानियों में नजर आती है ।

प्रमोद सिंह सबसे सीनियर ब्लॉगर की पुस्तक 'अंजाने मेलों में' और उनका 'सिलेमा' ब्लॉग काफी चर्चित रहा। किशोर चौधरी की 'चौराहे पर जिन्दगी' ,'धूप के आइने में', 'जादू भरी लड़की'। दिव्य प्रकाश दुबे की 'मसाला चाय', 'मुसाफिर बंन्नि' अनु सिंह चौधरी की 'नीलास्कार्फ' (ऑनलाइन सबसे अधिक प्री बुक किताब), 'मम्मी की डायरी (हिन्दी की एकमात्र non fiction), सत्य व्यास की 'बनारस टॉकीज' (हिंद युग्म की सबसे अधिक बिकी किताब साल में 10000 से अधिक प्रतियाँ बिकीं। 2014 में संजय सिंह की 'रिश्ते' प्रभात प्रकाशन से छपी जो काफी चर्चित रही। निखिल सचान की 'नमक स्वादानुसार' 'आदमी आइस पाइस', पंकज दुबे की 'इश्कियाना', 'लूजरकहीं का' सववेमत), मानव कशैल की 'ठीक तुम्हारे पीछे' आदि अनेक ऑनलाइन पॉपुलर लेखक और किताबें हैं।

ऑनलाइन युवा लेखिकाओं की कलम में एक नयापन है। स्वानन्द किरकिरे 'आजदी मेरा ब्रांड है' ऑनलाइन पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं "मैंने जहाँ–तहाँ कई महिला लेखकों को पढ़ा है। उनकी लेखनी में गुस्सा है। होना भी चाहिए। उन पर मेरा आक्षेप नहीं, पर कई बार वह गुस्सा बेमानी या उद्दंड बन जाता है और मुद्दा पीछे छोड़ विरोधियों को उन्हें गलत साबित करने की अच्छी–खासी जगह दे देता अनुराधा की लेखनी चतुर है, गुस्सैल है पर उद्दंड नहीं है। वह स्त्री–पुरुष दोनों को समाहित करती है और मुद्दे को जीतना जरूरी है ठीक उतना समय देने के बाद आगे बढ़ती है–सौन्द्रर्य की तरफ, जीवन की तरफ अनुराधा मैं हूं– न स्त्री, न पुरुष जीवन को सरल बनाने का एक रूमानी स्वप्न लिए जीने वाला एक इनसान। इस वाद या उस इज्म से उसे कोई सरोकार नहीं। उसे सिर्फ इतना पता है की यहाँ समानता नहीं है और वह होनी चाहिए। और इतनी आसान–सी चीज का होना क्यों इतना मुश्किल है.।"

आजतक, साहित्य समीक्षा में अनु सिंह चौधरी के 'नीला स्कार्फ' की रिपोर्ट के अनुसार इस पुस्तक में आज की औरतों के जिंदगी की कहानिया है। लेखिका ने औरतों की जिंदगी के कई रंगों को इसमें सजोया है। इसमें दूसरों के घर में कामकरने वाली स्त्री, अपने अस्तित्व के लिए अपनों से लड़ती स्त्री, प्रेम के मायाजाल में उलझी स्त्री, स्वयं पर इतराती स्त्री आदि की ह्रदय को छुनेवाली कहानियाँ हैं।

वैसे तो लघुकथा की एक सुदृढ परम्परा विश्व साहित्य और हिंदी साहित्य की रही है पर इंटरनेट ऑनलाइन कथा संसार वैसा नहीं. ऑनलाइन कहानियों में गहराई और गंभीरता की कमी नजर आती है. संवेदनाओं और एहसासो की वह गहरी पैठ की कमी छलकती है। प्रेमचंद, अज्ञेय मोहन राकेश आदि को पढ़ने वाले शायद इसे पढना कम पसंद करें. पर रोज के भागमभाग में आम पाठक को शायद यह हल्की–फुल्की रचनाएँ भा जायेंगी. हर तरह के पाठक है और हर तरफ की रचनाओं का अपना पाठक वर्ग होता है। ऑनलाइन कहानियों का पाठक वर्ग भी अलग सा ही है. गंभीर लेखन की कतार में ये कहानियाँ नहीं है और इसके लेखक भी इस को स्वीकारते हैं. पर नौकरी की भागदौड़ में, सफर की रफ्तार और ऊब के बीच। मोबाइल या लैपटॉप में छोटी छोटी इंटरनेट कहानियाँ, एहसास के तारों को छुकर हल्की सी मुस्कान या हवा का एक शीतल झोंका सा साबित हो सकती हैं।

इस हिन्दी किताब की समीक्षा अंग्रेजी में करते हुए एक समीक्षक का कहना है कि वे उन अंग्रेजी पाठकों को बताना चाहते है कि हिंदी में प्रयोग हो रहे है और उन्हें इसे पढना चाहिए. आज की युवा पीढ़ी जो इंटरनेट पर अंग्रेजी का रचनाओं को पढ़ते है और हिंदी जानते हैं हिंदी में कुछ पढना चाहते हैं उनके लिए यह पुस्तक सही है। कम शब्दों में कई कहानियाँ है, कई तो कहानी कहने के लायक भी नहीं, पर संवेदना या एहसास का एक स्पर्श जरूर है. और आज की युवा पीढ़ी हिंदी क्षण को तलाशते हैं। फिल्म के बड़े पदों से ज्यादा इंटरनेट के छोटे–छोटे शो जो इन्जॉय करते हैं उनके लिए यह बहुत सही है।

इंटरनेट कहानियों की हिन्दी आप से बात करती चलती है, एक बेहद जरूरी बात–विचार, इन, के पास विचार है जो आज के युवा वर्ग के विचार हैं। यह विचार अंग्रेजी में जगह–जगह दिखता है पर हिन्दी में आते ही उस की सहजता खोजाती है। सबसे अच्छी बात यह है कि ये उत्तर नहीं देती प्रश्न पूछती है बेहद लॉजिकल, जायज प्रश्न। शायद इसलिए आज के युवा इनसे जुड़ रहा हैं।

ऑनलाइन कहानियों के शिल्प पर बात करना अभी जल्दी होगी। अभी ऑनलाइन कहानियों का दौर शुरू हुआ है। जहाँ अभिव्यक्ति को प्राथमिकता दी गई है। क्षण और पल की अनुभूति आज की डायरी की तरह या कहें एहसास को जीने से पूर्व उसकी अभिव्यक्ति भर है जो शब्द में बंधकर उभरती है. बहुत सोचकर या मंथन के बाद नहीं बल्कि तत्काल अभिव्यक्ति है। उँगलियों के प्रवाह के साथ चलते में शब्द संवेदनाओं को छूकर आगे बढ़ जाते हैं। इन की भाषा की बात करें तो 'नई वाली हिन्दी' के नाम से इन की चर्चा हो रही है। हिंगलिश बोलते बोलते अब लिखित में भी आ गई है। ऑनलाइन कहानियाँ धड़ल्ले से अंग्रेजी शब्द और रोमन लिपि में शब्द एवं वाक्य को आत्मसात कर रही है ।

मनोरंजन के अति आधुनिक उपकरणों ने जैसे रेडियो, टेलिविजन और मोबाइल के इंटरनेट पर गीत, संगीत, नृत्य, नाटक, सिनेमा आदि उपलब्ध होने लगीं तो पुस्तक कहीं पीछे छूट गई। पत्रिकाएँ बंद होने लगीं। उपन्यास और कहानी संकलन बिकने कम हो गए। ऐसे में हिन्दी साहित्य को पाठकवर्ग की कमी महसूस होने लगी। प्रसिद्ध कहानियाँ और कथाकार पाठ्य क्रम में विषय की तरह पढ़े जाने लगे। हाथ में कभी प्रेमचंद न सही गुलशन नंदा या रानू की किताबें दिखती थीं उस की जगह मोबाइल ने ले ली। ऐसे में कहानियों खास कर हिन्दी कहानियों को नए पाठक वर्ग से जोड़ने का काम कर रही है ऑन–लाइन कहानियाँ। एक खास वर्ग जुड़ रहा है हिंदी साहित्य से। प्रकाशकों का कहना है की इन ऑन दृ लाईन पुस्तकों की बिक्री के बाद हमारी परंपरागत प्रसिद्ध बैस्ट–सेल वाली पुस्तकों की बिक्री भी बढ़ गई है। जो साबित करता है की जब हिंदी पत्रिकाएँ लगातार बंद हो रही थीं हिंदी उपन्यास कहानी संकलन आदि की

दुकानदारी धीमी थी तब लगनेल गाथा की शायद महानगर की नई पीढ़ी अंग्रेजी के बेस्ट सैलर को ही स्वीकारेगी। शायद यह पीढ़ी हिंदी पढ़ना ही भूल जाएगी। ऐसे में ऑनलाइन कहानियाँ और उनका छप कर पुस्तक रूप में आने पर उनकी बिक्री कहीं न कहीं विश्वास दिलाती है की "हिन्दी साहित्य अभी बाकी है दोस्तों"।

महानगर में अंग्रेजी पढ़ने वालों या मोबाइल चलाने वाला के हाथ में ये किताबें दिखना और अंग्रेजी के की जगह इन किताबों का पढ़ा जाना, हिंदी समाज के लिए सुखद और संतोषजनक तो है ही। इतना ही नहीं ऑनलाइन कहानियों के पाठक अपनी प्रतिक्रिया भी लगातार देते है जो काफी उत्साहवर्धक है। इस तरह की प्रतिक्रिया लेखक और पाठक को एक दूसरे के करीब लाती है । कई बार यह संवाद और बहस नई विचारों और सृजन के नए आयाम को सामने लाता है। यह पाठक को कल्पनाशील ही नहीं बनाता उन्हें सोचने और विचारों से जुड़ने को मजबूत कर देता है ।

ऑनलाइन रजत की समीक्षा–'कहानी तो क्या है, बस कुछ एहसास है और शब्दों का चालाकी भरा उपयोग कुछ मन भावन दृष्टान्त रचते हैं। मगर अफसोस यह कला फेसबुक पर ही ज्यादा दिलचस्प लगती है। पल भर का मनोरंजन और हल्की सी मुस्कराहट बन गई बात। दिल्ली वालों के लिए है नॉन–देल्हि एट्ल को समझने में थोडी मुश्किल होगी। किताब सिर्फ रविश–अंदाज प्रेमीयो एवं हाई–कोर दिल्ली फैन्स के लिए है। कई इसी सोच में हैरान खड़े रह सकते है कि हिंदी का इस्तेमाल इतना क्रांतिकारी कैसे हो सकता है।'

वैसे इनकी सार्थकता, धृष्टता, भाषा, संभावना आदि पर बहस जारी है और बाँकी है ।

उपसंहार

हिन्दी साहित्य को जब पाठकवर्ग की कमी महसूस होने लगी, प्रसिद्ध कहानियाँ और कथाकार सिर्फ पाठ्यक्रम में विषय की तरह पढ़े जाने लगे, हाथ में प्रेमचंद या गुलशन नंदा या रानू की किताबें या हिन्दी पत्रिकाओं की जगह मोबाइल ने लेली। तब कहानियों खासकर हिन्दी कहानियों को नए पाठकवर्ग से जोड़ने का काम किया ऑन–लाइन कहानियाँ ने। ऑन–लाईन पुस्तकों की बिक्री के बाद परंपरागत प्रसिद्ध बैस्ट–सेल वाली पुस्तकों की बिक्री भी बढ़ गई है। जो साबित करता है की जब हिंदी पत्रिकाएँ लगातार बंद हो रही थीं हिंदी उपन्यास, कहानी संकलन आदि की दुकानदारी धीमी थी दृ जब लगने लगा था की शायद महानगर की नई पीढ़ी अंग्रेजी के बेस्ट सैलर को ही स्वीकारेगी। तब ऑनलाइन कहानियाँ और उनका छपकर पुस्तक रूप में आना और उनकी बिक्री विश्वास दिलाती है की हिन्दी साहित्य में कहानीयों और उपन्यासों का एक नया युग आरंभ हो चुका है।

संदर्भग्रंथ

1. सचान निखिल, जिंदगी आइसपाइस, हिन्द युग्म, 2015
2. कविता, सत्याग्रह 7 फरवरी 2016
3. कुमार रवीश, इश्क में शहर होना, राजकमल 2015
4. झा गिरीन्द्रनाथ, इश्क में माटी सोना, राजकमल 2015
5. कुमार विनीत, इश्क कोई न्यूज नहीं, राजकमल 2016
6. चौधरी अनु सिंह. नीलास्कार्फ, हिन्द युग्म, 2015
7. बेनीवाल अनुराधा, आजादी मेरा ब्रांड, राजकमल 2016